विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा शोध पत्र प्रकाशन हेतु अधिकृत राष्ट्रीय शोध पत्रिका

ISSN 2277 - 9264

हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

संकल्य

45 वर्षों से निरंतर प्रकाशित

अक्तूबर-दिसंबर, 2017

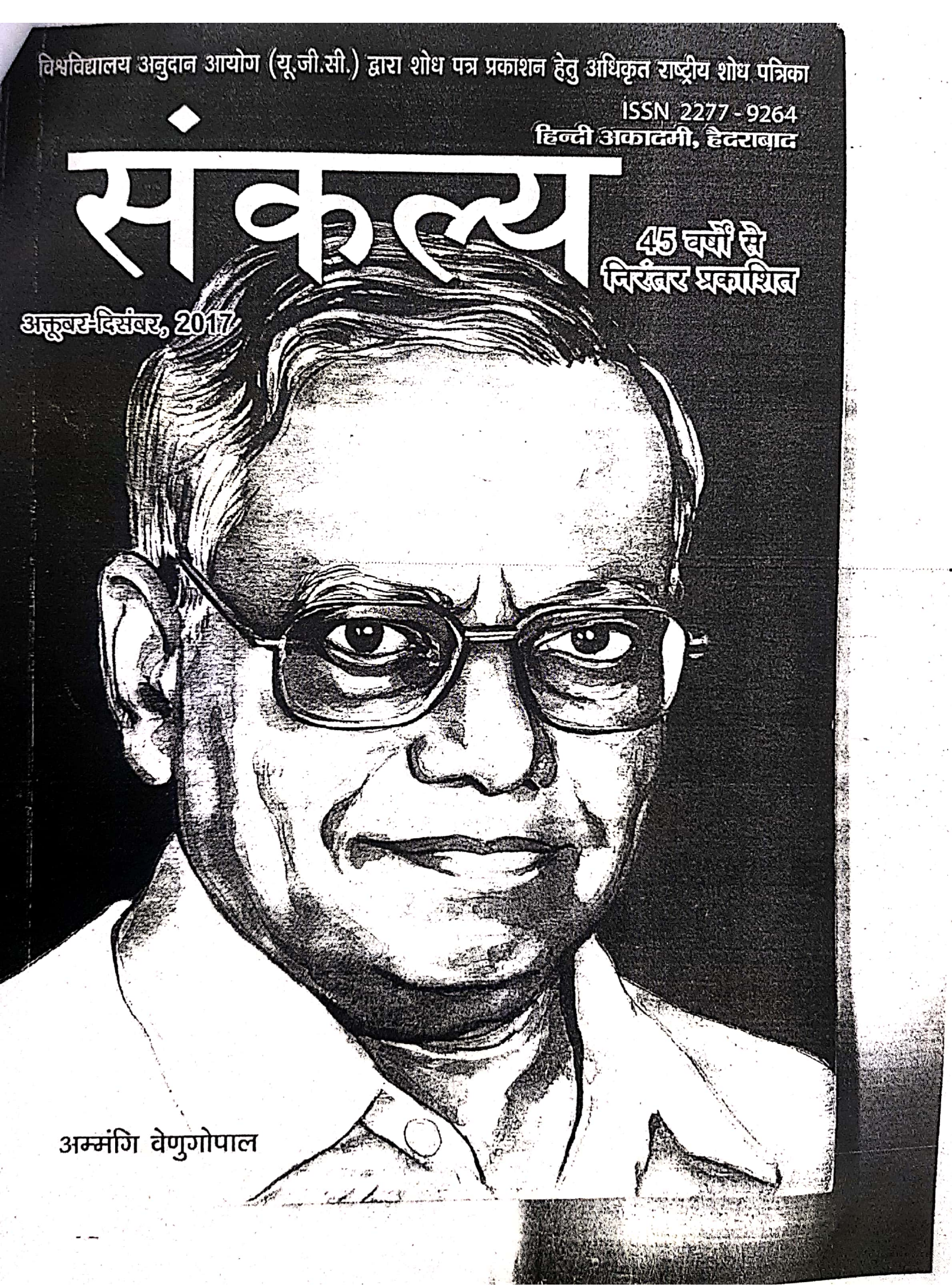

अम्मंगि वेणुगोपाल

Scanned with CamScanner

39 डॉ.किरण तिवारी/आधुनिक भोजपुरी के आधार स्तंभ :आचार्य महेंद्र शास्त्री
47 डॉ.अमर सिंह वधान/नोबेल पुरस्कार और भारतीय लेखक
52 बद्रीनारायण तिवारी/भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब : इंडोनेशिया
54 देवदत्त शर्मा/कैकेई : एक नवीन संदर्भ
58 डॉ.अखिलेश शंखधर/पूर्वोत्तर भारत और अज्ञेय की कहानियाँ
61 डॉ.विजय हिंदुराव पाटील/निराला के काव्य में राष्ट्र-प्रेम
65 डॉ.जी.वी.रत्नाकर/हिंदी और तेलुगु कविता में प्रस्तावित मानवाधिकार
69 डॉ.रमा पद्मजा वेदुला/महिला कथा लेखन में स्त्री चेतना की नई अवधारणा
72 डॉ.प्रियदर्शिनी/मुक्तिबोध और उनकी कहानियों में संवेदना दृष्टि
76 डॉ.मोहम्मद जमील अहमद/भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि : रसखान
79 डॉ.लीमचंद/भूमंडलीकरण, हिंदी संसारीकरण की वैश्विक संस्कार संयोजना
84 प्रदीप कुमार ठाकुर/दलित साहित्य : समानांतर साहित्य की अंतर्वर्ती धारा
88 डॉ.सरिता जाधव/हिंदी कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ
95 के.एच.अरुणा देवी/स्त्री विमर्श की दृष्टि से इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता का अध्ययन
100 डॉ.रत्नेश कुमार यादव/हिंदी उपन्यास कथा एवं शिल्प का अंत:संबंध
109 डॉ.के.सुवर्णा/कहानी : एक परिचय

संस्मरण

111 ओम धीरज/स्मृति शेष श्री हरिवंश पाठक गुमनाम : पाठकों के बीच जो गुमनाम नहीं रहा

हिंदी कहानी

115 डॉ.रमा द्विवेदी/खंडित यक्षिणी
120 देवेंद्र कुमार मिश्रा/दोषी कौन?
126 अनुज प्रताप सिंह/बची हुई संवेदनाएँ

तेलुगु कहानी

131 पारनंदि निर्मला/जेल

व्यंग्य

136 रामचरण यादव/कुर्सी के कारण

लघु कथा

140 एस.सी.कटारिया/लाल कुरता/भीख तो नहीं मांगी।

पुस्तक समीक्षा

141 रामदेव शुक्ल/सक्रिय वृद्धा का बचपन
145 डॉ.कंचन सेठ/रजाकार की समीक्षा
148 कांति अय्यर/यहाँ से देखो अपने को : जिसने अपने को देखा वह प्रभु पा गया
150 प्रमोद कुमार तिवारी/'संकल्प' विचार गोष्ठी संपन्न

Scanned with CamScanner

हिंदी कहानियों में चित्रित नारी समस्याएँ

डॉ.सरिता जाधव

हिंदी की पहली कहानी 'दुलाईवाली' से लेकर आधुनिकतम कहानियों में स्त्री एक लंबी यात्रा करती, किसी-न-किसी रूप में आधुनिक समस्याओं के केंद्र में बँधी हुई है। हिंदी कहानी में स्त्री के निरंतर बदलते रूपों और उससे जुड़ी परिस्थितियों और समस्याओं को दर्शाती है। नारी का शनैः-शनैः स्थिति को प्राप्त होने और उसकी स्वतंत्र होने की जिज्ञासा अंतिम दशक की कहानियों में व्याप्त है। सामाजिक दायरे से हटकर स्त्री की चिंता-"आज इसकी व्यक्ति की चिंता की सीमा का अतिक्रमण कर संसद तक पहुँच गई है और संसद का अर्थ होता है-संपूर्ण देश, संपूर्ण समाज। सभी चाहते थे और चाहते हैं कि स्त्री पुनः अपने पूर्व पद पर सम्मान के साथ प्रतिष्ठित हो, वह शक्ति प्राप्त करे और उसे अबला न कहा जाए। आज स्त्री अबला से सबला बनने की प्रक्रिया से गुजर रही है।" अंतिम दशक की कहानियों में स्त्री की अबला से सबला बनने की छटपटाहट प्रारंभ होती है। नारी की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने पर वास्तविकता यह उजागर होती है कि उसका जीवन एक निरीह प्राणी के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। क्योंकि आज की स्त्री भी पारंपरिक स्त्री के समान भोजन, कपड़ा और दवाई के अभाव में मर रही है। अद्यतन युग में सशक्तीकरण की ओर बढ़ती हुई भी वह या तो एकांतिक जीवन में घुटती और पुरुष के साथ के बिना द्वंद्वात्मकता के शिकार से पीड़ित है या फिर अशिक्षा के अत्याचारों को सहती, उसी पर आश्रित होकर निर्निमेष जीवन जीने को विवश है। अंतिम दशक के कहानीकारों ने नारी के विवाह, विवाहोत्तर, दहेज, यौन उत्पीड़न, पारिवारिक, अंधविश्वास, राजनीति और आर्थिक समस्याओं को अपनी कहानी का केंद्र बनाया है।

1. विवाह की समस्या

स्त्री और पुरुष के जीवन में 'विवाह' का अत्यंत महत्वपूर्ण महत्व होता है। माँ-बाप भी अपने बच्चे के सुरक्षित भविष्य और अच्छे विवाह की कल्पना करते हैं। लड़कियों के विवाह को लेकर अंतिम दशक की हिंदी कहानियों में व्यापक चित्रण देखने को मिलता है। कहीं स्त्री शिक्षित होने के कारण अच्छे पढ़े-लिखे वर की तलाश से पीड़ित है, तो कहीं दहेज या प्रेम संबंधों के कारण जाति, धर्म की सीमा रेखा से जूझ रही है। 'सूर्यबाला' कृत 'वे जरी के फूल' की रुक्की (रुक्मिणी) भी विवाह की समस्या का शिकार है। कहानी की राधा और नमिता के आपसी संवाद से उसकी विवाह की समस्या का चित्रण होता है। वह अनाथ थी और शिक्षित भी की। एक सरकारी स्कूल में अध्यापिका होने पर भी उससे कोई विवाह करने के लिए आगे नहीं आता।

मीना अग्रवाल कृत 'पीहर' की नायिका 'लावी' भी प्रेम-विवाह की समस्या से परेशान है। वह आनंद नामक युवक से प्रेम करती है किंतु पारंपरिक रूढ़ियों के आगे उसकी एक नहीं चलती। वह अपनी भाभी से आनंद के साथ उसके प्रेम की बात करती है, तो बात

Scanned with CamScanner

हिन्दी साहित्य का वैश्विक स्तर पर महत्व

संपादक मंडल - राजेश अग्रवाल
डॉ सुषमा देवी
डॉ. डी विद्याधर
डॉ. अफ़सर उन्निसा बेगम
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी
डॉ. जयाप्रदा

प्रकाशक - मिलिन्द प्रकाशन
सुलतान बज़ार, हैदराबाद

प्रथम संस्करण : सितंबर 2017

ISBN : 978-81-904572-5-6

हिन्दी काव्य का महत्व : वैश्विक परिदृश्य

-डॉ.अफ़सर उन्निसां बेगम

'मेरा देश भारत है, विश्व भर में इसका ध्वज लहराऊंगी / मिट्टी को इसकी माथे पर अपने, मैं सजाऊँगी/रहूँ मैं देस या फिर परदेस में/ हिंदी भाषा, साहित्य, संस्कृति, बसी तन, मन, वचन और मेरे कर्म में/' मानव मन मस्तिष्क की भावनाओं के प्रकटीकरण का सशक्त व ईश्वरप्रदत्त प्रतिभा का प्रभावपूर्ण माध्यम काव्य सृजना है। यह कवि के काव्यात्मक विचारों की अभिव्यक्ति है। जिसे वह लिखित अथवा मौखिक रूप से पाठक या श्रोता के समक्ष प्रस्तुत करता है। काल, परिवेश, वातावरण, परिस्थिति, संस्कार आदि का प्रभाव कवि की रचनाओं में स्वमेव आ जाता है। जब तक कि कोई विषय उसके अंत:मन को छू नहीं लेता, तब तक वह उस पर कविता नहीं करता। कोई विषय जब उसको भीतर से उद्वेलित व अनुभूत होता है, तब अनायास ही प्रकट हो जाता है। कविता कवि के हृदय को उन्नत करती है और उसे उत्कृष्ट एवं अलौकिक पदार्थों का परिचय कराती है। जब कविता के पाठक के मन को कवि की अभिव्यक्ति छू लेती है, उसे वह अपने हृदय की बात प्रतीत होने लगती है, तब काव्य रचना पूर्ण कसौटी को पा लेती है।

आज की कविता का फलक अति–विस्तृत है। हिंदी काव्य वैश्विक स्तर पर अपना स्थान और महत्व स्थापित करता जा रहा है। विश्व के लगभग देशों में हिंदी भाषा पहुँचकर अपनी जगह बना चुकी है। बहुत से भारतीय भारत से इतर देशों में हिंदी काव्य रचना व विकास के कार्य में जुटे हैं। इनमें विदेशी विश्वविद्यालयों के प्रध्यापक और दूतावास के अधिकारियों के अलावा सामान्य जन भी पद्य लेखन कार्य से विदेश में हिन्दी भाषा को लोकप्रिय बना रहें हैं। विदेश में बसे साहित्यकार इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनकी रचनाओं में भिन्न भिन्न देशों की परिस्थितियों को विकास मिलता है। इनके द्वारा रचित साहित्य के ज़रिए से हिंदी साहित्य का अंतरराष्ट्रीय विकास हो रहा है। हिंदी भाषा विश्व के कोने कोने तक विस्तार पा रही है।

'आज की तारीख में लगभग 22 मिलियन ऐसे भारतवंशी विश्व के 132 देशों में अपनी जड़े जमा चुके हैं जिनके लिए हिंदी उनकी सभ्यता, संस्कृति, पहचान और अस्मिता है। आज विश्व के तकरीबन 180 विश्वविद्यालयों में हिंदी की विधिवत शिक्षा के साथ शोध कार्य भी हो रहे हैं। मात्र यू.के.में ही 12 लाख प्रवासी भारतवंशी ब्रिटिश जनजीवन के महत्वपूर्ण अंग बन चुके हैं।'1

विश्व के विभिन्न देशों अमेरिका, मॉरिशस, ब्रिटेन, फीजी, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, डेनमार्क, नार्वे, सऊदी अरब, शारजा, जापान और यूरोप के देशों में भारतीय और उनकी हिंदी भाषा साहित्य विकसित होकर फल-फूल रहा है, जिसे साहित्यिक शब्दों में प्रवासी हिंदी

Scanned with CamScanner

सिनेमा और हिंदी

डॉ. अफसर उन्निसाँ बेगम, (एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्य
हिंदी विभाग, मुमताज डिग्री एण्ड पी.जी कॉलेज, मलकपेट, हैदराबाद तेलंगान
मो. : 8179704078, 837420833
ईमेल : bafsarunnisa@gmail.co

हिंदी सिनेमा आज भारत एवं विश्व भर में पहली पसंद बना हुआ है। यह साहित्य की उन विधाओं में से है जो भाषा सिखाने के साथ-साथ दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करता है। सिनेमा समाज के प्रत्येक वर्ग का सुगमता और सजगता से दृश्य अंकन करता है। मानव जीवन समस्याओं से भरा है। सिनेमा देखकर मनुष्य कुछ देर के लिए अपने जीवन के दुःख, संघर्ष और निराशा को भूलकर आनंद प्राप्त करता है। मनोरंजन और ज्ञानार्जन के माध्यमों में सिनेमा एक सशक्त माध्यम के रूप में उन्नत है। सिनेमा का विषय क्षेत्र अत्यंत ही व्यापक है। धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामाजिक, खेलकूद, मनोरंजन, ज्ञान-विज्ञान, संगीत, साहित्य, कला, तकनीकी आदि समस्त विषयों पर उत्तम से सर्वोत्तम फिल्में भारत में बनती है। हिंदी सिनेमा का आरंभ सन् १८९९ ई.वीं में श्री भटवडेकर ने लघु फिल्में बनाकर किया। इसके बाद दादा साहब फाल्के ने प्रथम लंबी मूक पौराणिक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' सन् १९१३ में बनाकर हिंदी फिल्मों के जनक बने। सत्य और न्याय के संदेश पर आधारित यह फिल्म ध्वनिरहित होकर भी लोगों में लोकप्रिय साबित हुई। सन् १९३१ में अर्देशिर ईरानी ने पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनाई, जो हिंदी भाषा के विकास की कामयाब फिल्म साबित हुई। इसके बाद फिल्म निर्माता निर्देशकों ने असंख्य फिल्मों का निर्माण किया। आज सिनेमा ने एक वृहद उद्योग का रूप धारण कर लिया है। भारत में उत्तम से सर्वोत्तम फिल्में तेज रफ्तार से बन रहीं हैं। आवश्यकतानुसार उसकी शूटिंग विदेशों में भी होती है। यह 100 करोड़ से अधिक उद्योग करने के स्तर तक पहुँच चुकी है।

अनेक प्रांतीय भाषाओं और राष्ट्रीय भाषा हिंदी में फिल्में बनती ही रहती हैं। अब तो दूरदर्शन पर फिल्में और धारावाहिक लगातार दिखाए जाते हैं। बंगाली, गुजराती, मलयाली, कन्नड़, मराठी, भोजपुरी, तमिल, तेलुगू, पंजाबी आदि अनेक भाषाओं में तो फिल्में बनती हैं
सबसे अधिक फिल्में भारत की राष्ट्रीय भाषा हिंदी में बनाई जाती
हिंदी फिल्में देश-विदेश में बड़ी पसंद से देखी जाती है। इन फिल्मों
गीत सबकी जुबान पर होते हैं। हिंदी विश्व की दूसरे नंबर पर सर्व
क बोली जाने वाली भाषा है यह अपनी लिपि और ध्वन्यात्मक
(उच्चारण) के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञानसम्मत है। अनेक देशों
विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग स्थापित हुए हैं और पाठ्यक्रम में हिंदी
रखा गया है। "विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट पर अंकित विवर
के अनुसार आज की तारीख में लगभग 22 मिलियन ऐसे भारतवं
विश्व के 132 देशों में अपनी जड़ें जमा चुके हैं जिनके लिए हिंदी उ
की सभ्यता, संस्कृति, पहचान और अस्मिता है। आज विश्व के तकरीब
160 विश्वविद्यालयों में हिंदी की विधिवत शिक्षा के साथ शोध कार्य
हो रहे हैं।"[1] हिंदी भारत के अलावा बाहरी देशों जैसे पाकिस्तान, नेपा
भूटान, बांग्लादेश, म्यांमार, श्रीलंका, मालद्वीप, इंडोनेशिया, मलेशि
थाईलैंड, चीन, मंगोलिया, कोरिया जापान, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाड
यूरोप के देशों, संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), अफ़गानिस्तान, मि
उज्बेकिस्तान, कज़ाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान आदि से अधिक देशों त
फैली हुई है। उक्त देशों में हिंदी का प्रयोग बोलने, लिखने, पढ़ने त
अध्ययन और अध्यापन के कार्य पूरी रोचकता और उत्साह के स
किए जा रहे हैं।

साहित्यिक पुस्तकें केवल पढ़े-लिखे मनुष्य तक सीमित रहती
उनका आनंद और ज्ञान एक विशिष्ट वर्ग तक ही पहुँचता है लेकि
सिनेमा के माध्यम से जो बात कही जाए वह सुदूर तक और सभी व
तक पहुँचती है अनपढ़ भी उसे देखकर आनंद और ज्ञान प्राप्त क
सकते हैं। यही कारण है कि बड़े-बड़े विद्वान लेखकों की पुस्तकों

RNI NO-DELHIN 28802/2017 वर्ष :5 अंक :1 जनवरी 2018
भाषा सहोदरी -हिन्दी

Scanned with CamScanner

4

सैयद इब्राहीम रसखान का कृष्ण प्रेम और माधुर्य भक्ति

–डॉ. आफसर उनिसां बेगम

भारत एक धर्मनिरपेक्ष एवं सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक राष्ट्र है। यहां के साहित्य, संस्कृति, सभ्यता और एकता की प्रशंसा समस्त विश्व करता है। यहां पर सभी धर्मों-भाषाओं को प्रेम और आदर भाव से देखा जाता है। सांप्रदायिक सद्भाव यहां की विशेषता है। साहित्यकार सदैव समाज का हितैषी होता है। साहित्य में धर्म, जात-पात, भेदभाव की कोई जगह नहीं है। वह इन परिधियों से स्वतंत्र होकर अपने विचारों व भावों को अभिव्यक्ति देता है। रसखान ऐसे ही कृष्णभक्त महान कवि हैं।

या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहुँ पुर को तजि डारौं।
आठहु सिद्ध नवौ निधि को सुख नन्द की गाड़ चराड़ बिसारौं॥
ए रसखानि जबै इन नैनन ते ब्रज के बन बाग तडाग निहारौं।
कोअिक ये कलधौत के धाम करील की कुंजन ऊपर वारौं॥[1]

रसखान एक जागीरदार के पुत्र और जाति के पठान थे। उनकी जन्म-तिथि तथा स्थान के संबंध में विद्वानों में एकमत नहीं है। प्रोफेसर देशराज सिंह भाटी ने अपनी पुस्तक रसखान ग्रंथावली में इनकी जन्म-तिथि और स्थान का निर्धारण इस प्रकार किया है :

"रसखान का जन्म संवत् 1590 के लगभग दिल्ली में हुआ। इनका संबंध तत्कालीन शाही वंश से था, किंतु जब शाही वंश का पतन हुआ और दिल्ली उजड़ गयी तो यह संवत् 1512 के लगभग दिल्ली छोड़कर ब्रज में आ गये और वहां कृष्णभक्ति में तल्लीन रहने लगे।"

तोरि मानिनी ते हियो फोरि मोहिनी मान।
प्रेम देव की छबिहि लखि, भये मियां रसखान॥[2]

ISBN : 978-81-214-0792-2

हिन्दी और उर्दू की साझी विरासत, संपादक : डा. करन सिंह ऊटवाल
नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली

अर्थात् मान करने वाली नारी का हृदय तोड़कर उसके प्रेम के बंधनों को छोड़कर और मन को मोहित करने वाली स्त्रियों के गर्व को चूर्ण करके तथा कृष्ण की शोभा को देखकर मुसलमान धर्मावलंबी रसखान कृष्ण प्रेम व भक्ति में तन्मय हो गया। आचार्य रामचंद्र शुक्ल इनके संबंध में लिखते हैं, "प्रेम के ऐसे सुंदर उद्गार इनके सवैयों से निकले कि जन साधारण प्रेम या शृंगार संबंधी कवित्त सवैया को ही रसखान कहने लगे–जैसे कोई रसखान सुनाओ।"[3]

रसखान दिल्ली के समीप पिहानी के रहने वाले थे और ब्रज जाकर बस गये। वहां उन्होंने विट्ठलनाथ जी से दीक्षा प्राप्त की। कृष्ण प्रेम का वर्णन इनकी भक्ति और काव्य रचना का आधार है :

मानुष हो तौ वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरौ नित नन्द की धेनु मँझारन॥
पाहन हौ तो वही गिरि को जो धरयौ कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं बसेरो करौं मिल कालिन्दी-कूल कदम्ब की डारन॥[4]

इस तरह रसखान श्रीकृष्ण के प्रति अपने स्वतंत्र भाव की भक्ति व प्रेम की अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं कि यदि मुझे आगामी जन्म में मनुष्य योनि मिले तो मैं वही मनुष्य बनूं जिससे ब्रज और गोकुल गांव के ग्वालों के साथ रहने का अवसर मिले। यदि मुझे पशु योनि मिले तो मेरा जन्म ब्रज या गोकुल में ही हो ताकि नित्य नंद की गायों के मध्य में विचरण करने का सौभाग्य प्राप्त हो सके। यदि मुझे पत्थर योनि मिले तो मैं उसी पर्वत का बनूं जिसे श्रीकृष्ण ने इंद्र का गर्व नष्ट करने के लिए अपने हाथ पर छाते की भांति उठा लिया था। यदि मुझे पक्षी योनि मिले तो मैं ब्रज में ही जन्म पाऊं ताकि यमुना के तट पर खड़े हुए कदंब के वृक्ष की डालियों में निवास कर सकूं।

रसखान ने अपना संबंध उन्हीं वस्तुओं से जोड़ने की इच्छा प्रकट की है जिनसे कृष्ण का संबंध रहा है। भक्तों को चाहे जिस अवस्था में रहना पड़े, उसे उसके आराध्य देव के दर्शन नित्य मिलते रहें, यही उसके जीवन का लक्ष्य होता है। रसखान ने भी इसी लक्ष्य की भावमयी अभिव्यंजना की है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिन मुसलमान हरि भक्तों के लिए कहा था 'इन मुसलमान हरिजन पर कोटिन हिंदू वारिए', उनमें रसखान का नाम सर्वोपरि है।

इनकी वेशभूषा वैष्णव भक्तों की थी और यह बहुत-सी कठियां पहना करते थे। कहते हैं कि बादशाह अकबर ने रसखान को दीन-ए-इलाही में दीक्षित होने के लिए कहा, पर इन्होंने इनकार कर दिया। तब किसी ने बादशाह से इनकी चुगली की और इन्हें कठोर दंड देने का परामर्श दिया। इस घटना की प्रतिक्रिया स्वरूप रसखान ने एक दोहा रचा :

Scanned with CamScanner